भाषा और

fgUnh Hkk’kk ,oa cksfy;k

बोलियाँ

भाषा - भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य मन के भावों और विचारों को बोलकर और लिखकर प्रकट करता है। वह भाषा के द्वारा दूसरों के भावों और विचारों को सुनकर और पढ़कर जानता है।

हिन्दी भाषा	सं.	बोली	बोली–क्षेत्र
1. पश्चिमी हिन्दी (पश्चिमी उपभाषा) शौरसेनी अपभ्रंश	1	बुंदेली	छतरपुर (मध्यप्रदेश व०प्र०)
	2	कन्नौजी	कन्नोज (उत्तर प्रदेश)
	3	ब्रजभाषा	मथुरा, आगरा (उ०प्र०)
	4	खड़ीबोली (कौरवी)	दिल्ली, मेरठ, सहारनपुर, बिजनौर (उ०प्र०)
	5	बांगरू (हरियाणवी)	रोहतक (हरियाणवी)

हिन्दी भाषा	सं.	बोली	बोली–क्षेत्र
2. पूर्वी हिन्दी (पूर्वी उपभाषा) अर्द्धमागधीअपभ्रंग	6	अवधी	लखनऊ (उ०प्र०)
	7	बघेली	रीवा (मध्यप्रदेश, उ०प्र०)
	8	छत्तीसगढ़	रायपुर (छत्तीसगढ़)

हिन्दी भाषा	सं.	बोली	बोली–क्षेत्र
3. बिहारी हिंदी (बिहारी उपभाषा) मागधी अपंभ्रश	9	मगही	गया, (बिहार)
	10	मैथिली	दरंभगा (बिहार)
	11	भोजपुरी	बोलियाँ (पूर्वी उ०प्र०, बिहार)
4. पहाड़ी हिन्दी (पहाडी उपभाषा) खस (शौरसेनी अपभ्रंग से प्रभावित	12	मंडियाली	मंडी जिला (हिमाचल प्रदेश)
	13	गढ़वाली	टिहरी गढ़वाल (उत्तराखडं)
	14	कुमाऊँगी	अल्मोड़ा, नैनीताल (")

हिन्दी भाषा	सं.	बोली	बोली–क्षेत्र
5. राजस्थानी हिन्दी राजस्थानी उपभाषा शौरसेनी उपभ्रंश	15	मेवाड़ी	उदयपुर, भीलवाड़ा, चितौड़गढ़
	16	मेवाती	अलवर, भरतपुर, गुड़गाँव, दिल्ली, करनाल का पश्चिमी क्षेत्र
	17	हाड़ौती	कोटा, बूँदी, बारां, झालावाड़
	18	मारवाड़ी	जोधपुर, बिकानेर, जैसलमेर, पाली, नागौर, जालौर, सिरोही (राजस्थान)

बोली → उपभाषा → भाषा का विकास ठीक वैसा ही होता है, जैसे

गाँव → कस्बा → शहर

हिंदी

बोली - किसी छोटे क्षेत्र में स्थानीय व्यवहार में प्रयुक्त होने वाली भाषा का वह अल्प-विकसित रूप 'बोली' कहलाता है, जिसका कोई लिखित रूप अथवा साहित्य नहीं होता। या

भाषा का क्षेत्रीय रूप 'बोली' कहलाता है।

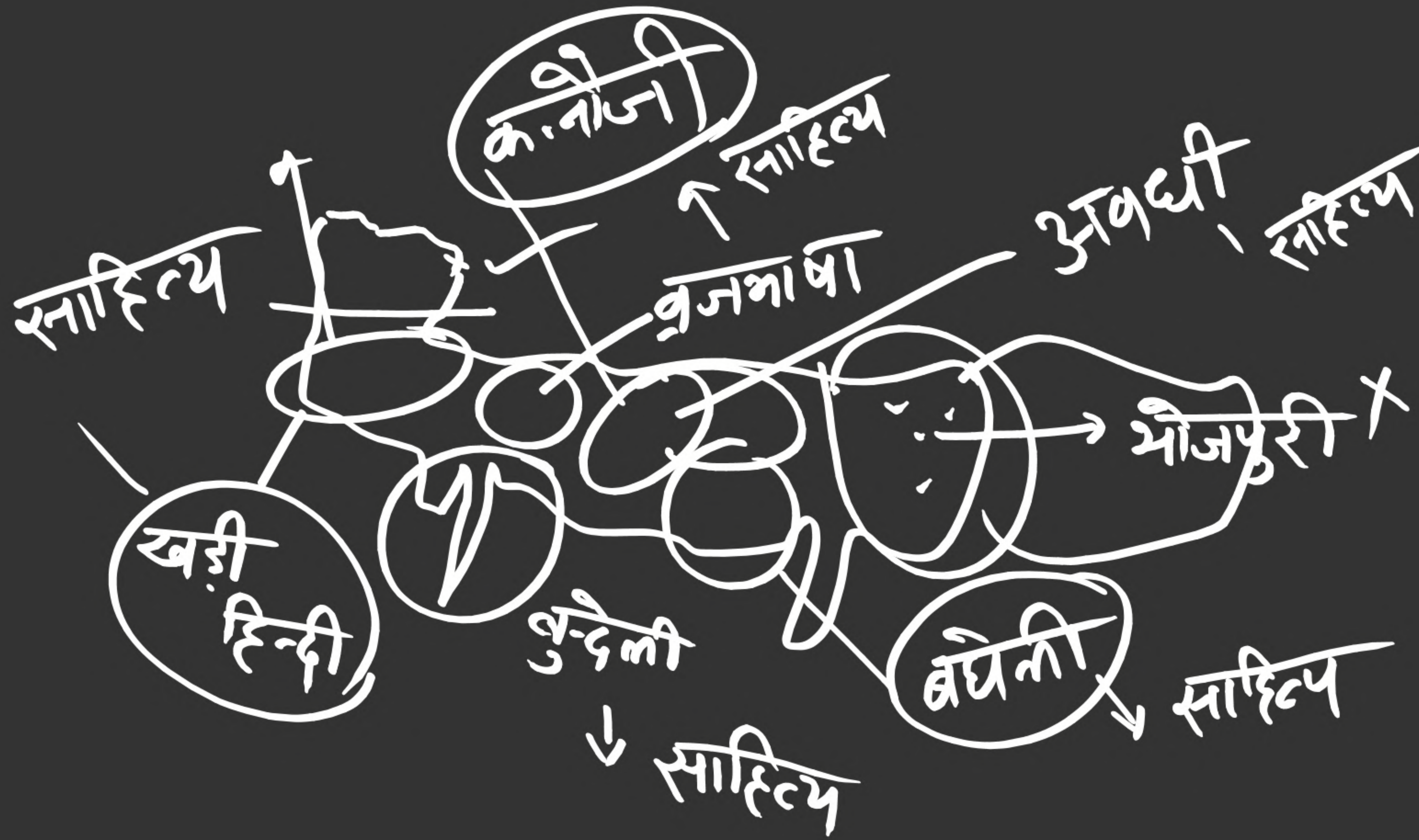
कन्नौजी
साहित्य
ब्रजभाषा
अवधी
साहित्य
साहित्य
भोजपुरी
खड़ी हिन्दी
बुन्देली
साहित्य
बघेली
साहित्य

- भाषा - 'भाषा' का एक विशाल विस्तृत क्षेत्र में बोलने, लिखने, साहित्य-रचना करने तथा संचार - माध्यमों के परस्पर आदान-प्रदान मं◌े प्रयुक्त होती हो, उसे भाषा कहते हैं।

हिन्दी

उप - भाषा

लोक साहित्य

- **भाषा परिवर्तन के कारण** - कई पीढ़ियों के अंतर, स्थान-विशेष की जलवायु, दैहिक भिन्न्ता, भौगोलिक विभिन्न्ता, जातीय और मानसिक अवस्था में अंतर रूचि और प्रवृत्ति में परिर्वतन एवं बदलाव तथा प्रयत्न साधन आदि कारणों से भाषा में परिवर्तन होते हैं।

जमक नन परदेश। अन्य देश।

हिन्दी भाषा का क्षेत्र हिमाचल प्रदेश, पंजाब का कुछ भाग हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, झारखण्ड, मध्य प्रदेश तथा बिहार के आसपास का क्षेत्र है। जिसे हिन्दी भाषी प्रदेश कहते हैं। इसे पूरे हिंदी प्रदेश में हिन्दी को पाँच उपभाषाएँ और इनके अन्तर्गत 18 बोलियाँ का उल्लेख है -

खड़ी बोली

इसका दूसरा नाम 'कौरवी' है कुछ लोग इसके अन्य नाम हिन्दुस्तानी 'नागरी', हिन्दी एवं 'सरहिन्दी' भी मानते हैं। इसका उद्भव शौरसेनी अपभ्रंश के उत्तरी रूप से हुआ है। खड़ी बोली का प्रयोग दो अर्थों में किया जाता है -

साहित्यिक हिन्दी

दिल्ली मेरठ के आस पास की लोक बोली खड़ी बोली की दो प्रधान बोलियाँ हैं -

- बिजनौर की खड़ी बोली
- मेरठ की बोली
- आज संस्कृत से युक्त खड़ी बोली ही भारत की राजभाषा है। खड़ी बोली का परिनिष्ठत रूप वर्तमान हिन्दी है, जो पत्र-पत्रिकाओं, शिक्षा, प्रशासन, व्यापार, तथा सूचना-संचार में प्रयुक्त की जाती है। देहरादून का मैदानी भाग, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, मेरठ, दिल्ली का कुछ भाग, बिजनौर, रामपुर, मुरादाबाद।

- हिन्दी की 'ऐ' 'औ' ध्वनियों के स्थान पर खड़ी बोली में 'ए' 'ओ' ध्वनियाँ मिलती है। यथा - 'और' का 'ओर' 'है' के स्थान पर 'हे'।
- हिन्दी में 'न' ध्वनि के स्थान पर खड़ी बोली में 'ण' का प्रयोग मिलता है। यथा-सुनना-सुणणा।
- साहित्यिक हिन्दी की ड़, ढ़ ध्वनियों को खड़ी बोली में ड, ढ बोला-लिखा जाता है यथा-बड़ा' -बडा, चढ़ा-चढा।

ब्रज प्रदेश की भाषा को ब्रजभाषा कहा जाता है। प्राचीन काल में ब्रज शब्द का प्रयोग पशुओं या गौओं का समूह या चरागाह के लिए होता था, इसका विकास शौरसेनी अपभ्रंश के मध्यवर्ती रूप से हुआ है। गंगा-यमुना के मध्य की भाषा होने के कारण डा ग्रियर्सन ने इसे 'अन्तर्वेदी' नाम दिया इसके अन्य नाम है - ब्रजी, ब्रिज, ब्रिजकी, भाषा मणि-माधुरी एवं नागभाषा आदि। मथुरा, अलीगढ़, आगरा, हाथरस, फिरोजाबाद, बुलन्दशहर, एटा, बदायुँ, मैनपुरी, बरेली आदि ब्रजभाषा के क्षेत्र हैं।

- इनमें तीनो ‘श्’, ‘ष’, ‘स्’ को केवल ‘स’ मिलता है।
- ऋ के स्थान पर - रि मिलता है।
- ‘व’ के स्थान पर ‘म’ का प्रचलन है - पायेंगे का पामेंगे।
- ‘ण’ के स्थान पर ‘न’ मिलता है - प्रवीण का प्रवीन
- ‘ड़’ - ‘ढ़’ ‘ल’ के स्थान पर ‘र’ का प्रयोग मिलता है - कड़ी का करी, उलझ का उरझ।
- खड़ी बोली हिन्दी के आकारान्त संज्ञाओं के स्थान पर औकारान्त संज्ञाएँ मिलती हैं। यथा - हमारा के स्थान पर हमारौ, उनका के स्थान पर उनकौ।

साहित्य तथा लोक साहित्य के क्षेत्र में यह भाषा बहुत ही सम्पन्न् है। इसके प्रमुख कवि हैं - अष्टदाप के समस्त कवि, रहीम, रसखान, बिहारी, देव, रत्नाकार, सत्यनारायण, 'कविरत्न'

हरियाणवी

इसका अन्य नाम 'वांगरू' है। हरियाणवी का विकास उत्तरी शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है। कुछ लोग इसे 'हरियानी' या 'हरियाणी' कुछ देश भाषा कके नाते 'देसाणी' भी कहते हैं। रोहतक व दिल्ली के जाटों के नाम से यह जादू तथा बांगर प्रदेश के सम्बन्ध होने के कारण यह 'बांगरू' कहलाती है।हरियाणा तथा दिल्ली का देहाती भाग, करनाल, रोहतक, हिसार, पटियाला, जींद, नाभा आदि।

कन्नौजी

कान्यकुब्ज प्राचीन काल में एक प्रदेश का नाम था। कन्नौजी भी शौरसेनी अपभ्रंश से निकली है। यह ब्रज के अत्यधिक समीप है। जिस कारण कुछ लोग इसे ब्रज की उपबोली मानते हैं। कन्नौजी में केवल लोक साहित्य प्राप्त है।

कन्नौजी भाषा का क्षेत्र - इटावा, फर्रूखाबाद, शाहजहाँपुर, कानपुर, हरदोई जिले इसके क्षेत्र में हैं। फर्रूखाबाद इस भाषा का केन्द्र है।

- इसकी वर्णमाला ब्रजभाषा से मिलती जुलती है।
- ऐ, औ के स्थान पर 'ए', 'ओ' का प्रयोग मिलता है - बडो, चलों
- कन्नौजी बोली की प्रधान प्रवृति है - शब्दों का ओकारान्त होना।
- यथा - हमारा-हमाओ, तुम्हारा-तुमाओ, मेरा-मेओ, बड़ा-बड़ो किया-करो, चला-चलो, गया-गओ यहाँ पहले दिए गए शब्द हिन्दी के हैं और दूसरा शब्द उसका कन्नौजी रूप है।

अवधी –

कुछ विद्वान इसे 'कौशली' व 'वैसवाडी' बोली भी कहते हैं। इस बोली का केन्द्र अयोध्या है। अयोध्या का विकसित रूप अवध है।

अवधी भाषा का क्षेत्र - लखनऊ, इलाहाबाद, फतेहपुर, मिर्जापुर, उन्◌ाव, रायबेरली, सीतापुर, फैजाबाद, गोंडा, बस्ती, सुल्तानपुर, प्रतापगढ़ बाराबंकी आदि।

- ‘य’, ‘व’ को ‘अ’ पाठ मिलता है, जैसे - करिए को ‘करिअ’, ‘छुवत’ का ‘छुअत’ हो जाता है।
- ‘ण’ को ‘न’, ‘ड’ और ‘र’, ‘य’ को ‘ज’, ‘व’ को ‘ब’ का प्रयोग होता है।

बघेली का उद्भव अर्द्धमागधी (अवधी के एक क्षेत्रीय रूप से) हुआ है। कुछ भाषा वैज्ञानिक इसको अवधी की एक बोली मानते हैं।

बघेली भाषा का क्षेत्र - इसका केन्द्र रीवा राज्य है। इसलिए इसे रीवाई भी कहते हैं। दमोह, जबलपुर, मण्डला, बालाघाट, फतेपुर, हमीरपुर, बांदा में इसका व्यवहार बुन्देली मिश्रित रूप मिलता है।

- अवधी के ‘व’ का ‘ब’ हो जाता है जैसे - आवा को आबा हो जोता है।
- ‘उ’, ‘ओ’, ‘इ’, ‘ए’ स्वरों का क्रमशः ‘या’ तथा ‘वा’ हो जाता है। जैसे - खैत का ख्यात, तुमरे का त्वारे।

इसका अन्य नाम 'लरिया' 'खल्टाही' भी है। इसका विकास अर्धमागधी अपभं्रग के दक्षिणी रूप से हुआ है। लोकगीतों की दृष्टि से यह भाषा सम्पन्न्ा है। इसमें साहित्य का अभाव है।

छत्तीसगढ़ी का क्षेत्र - सरगुजा, कौरिया, बिलासपुर, खैरागढ़, रायपुर, दुर्ग, नंदगाँव, कांकेर आदि।

- संज्ञा सर्वनाम में ‘ऐ’ व ‘औ’ ध्वनियाँ का क्रमशः ‘अइ’ ‘अउ’ रूप मिलता है। जैसे - बैल का बइल, जोन का जउन।
- इसमें शब्दों के मध्य में ‘ड़’ ध्वनि का लोप हो जाता है। जैसे - लड़का का लइका
- अल्पप्राण ध्वनियों का महाप्राण ध्वनियों में परिवर्तन की प्रवृत्ति है। जैसे - कचहरी को कछेरी
- ‘स’ के स्थान पर ‘छ’ का पाठ मिलता है। जैसे - सीता को छीता, सात को छात।

मारवाड़ी

यह प्राचीन मारवाड़ प्रान्त की बोली है। यह पश्चिमी राजस्थानी का रूप भी है। इसका विकास शौरसेनी अपभ्रंग से हुआ है। मारवाड़ी में साहित्य व लोक साहित्य दोनों पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। मीरा के पद इसी भाषा में है।

मारवाड़ी का क्षेत्र -जोधपुर, अजमेर, किशनगढ़, मेवाड़, जैसलमेर, बीकानेर, सिरोही आदी।

;g mÙkjh jktLFkkuh Hkk'kk gSA bldk fodkl Hkh "kkSjlsuh viHkza"k ls gqvk gSA bldh ,d fefJr cksyh vghjokVh gSA

esokrh dk {ks= & vyoj] xqM+xk¡o] Hkjriqj rFkk fnYyh] djuky dk if"peh {ks= vkfnA

LFkkuh; yksx bls ^<w¡<+k.kh* t;iqfj;k Hkh dgrs gSaA ;g “kkSjlsuh viaHkz”k ls fodflr gSa blesa dsoy yksd lkfgR; miyc/k gSA bls iwohZ jktLFkkuh Hkh dgrs gSaA

t;iqjh dk {ks= & t;iqj bldk çeq[k dsUnz gSA vtesj vkSj fd”kux<+ esa Hkh ;g cksyh tkrh gSA

bldks nf{k.kh jktLFkkuh Hkh dgrs gSaA ;g "kkSjlsuh viHkza"k ls fodflr gSA bldk eq[; dsUnz ekyok gSA ftldh çfrfuf/k cksyh ekyoh gSA

ekyoh dk {ks= & bankSj] mTtSu] nsokl] jryke] Hkksiky] gks"kaxkckn vkfnA

mn;iqj ,oa mlds vklikl ds {ks= dks esokM+ dgk tkrk gSA blfy, ;gk¡ dh cksyh esokM+h dgykrh gSA ;g ekjokM+h ds ckn jktLFkku dh egÙoiw.kZ cksyh ds fodflr vkSj f"k'V :i ls n"kZu gesa 12 oha ,oa 13 oha "krkCnh esa gh feyus yxrs gSaA esokM+h dk "kq) :i esokM+ ds xkaoksa esa gh ns[kus dks feyrk gSA esokM+h esa yksd lkfgR; dk foiqy Hk.Mkj gSA dsoy , vkSj vkS dh /ofu ds "kCn vf/kd ç;qä gksrs gSaA

gkM+k jktiwrksa }kjk “kkflr gksus ds dkj.k dksVk] cwanh] ckjk¡ ,oa >kykokM+ dk {ks= gkM+kSrh dgyk;k vkSj ;gk¡ dh cksyh gkM+kSrh tks nw¡<+kMh dh gh ,d micksyh gSA

- ;g iwohZ jktLFkku dh cksyh gSA
- fxz;lZu us vius xzaFk esa Hkh gM+kSrh dks cksyh ds :i esa ekU;rk nh gSA

<u>gM+kSrh dk {ks=</u> & orZeku {ks=&dksVk cwanh ¼bUnzx<+ ,oa uSuok rglhyksa ds mÙkjh Hkkx dks NksM+dj½ ckjka ¼fd"kuxat ,oa "kkgkckn rglhyksa ds iwohZ Hkkx ds vykok½ rFkk >kykokM+½ ds mÙkjh Hkkx dh çFke cksyh gSA

<u>if”peh igkM+h</u> & bldh yxHkx 30 cksfy;k¡ gSaA MkW- lquhr dqekj pVthZa bu cksfy;ks dk fodkl [kl viHkza”k ls rFkk mUgsa “kkSjlsuh ls çHkkfor ekurs gSaA blesa dsoy yksd lkfgR; Hkh miyC/k gSA

<u>if”peh igkM+h dk {ks=</u> & tkSulj] fljekSj] f”keyk] eaMh] pack o blds vklikl ds {ks= A

e/;orhZ igkM+h

bldk {ks= x<+oky dqekÅ¡ ds vklikl ds {ks= gSaA x<+okyh vkSj dqek;w¡uh e/; igkM+h ds nks eq[; Hksn gSA dqekÅ¡uh mÙkjk[k.M ds dqekÅ¡ e.Myesa cksyh tkrh gSA bl ij jktLFkkuh dk fo"ks'k çHkko gSA x<+okyh x<+oky e.My esa cksyh tkrh gSA ftldk çeq[k dsUnz Jhuxj gSA

uksV & dqN fo}kuksa us usikyh dks iwohZ igkM+h ekuk gSA iwohZ igkM+h dks ^xksj[kkyh* o ^[kldqjk* Hkh dgrs gSaA bl {ks= esa phuh&frCcrh Hkk'kk ifjokj dh usokjh cksyh dk Hkh O;kid ç;ksx gksrk gSA

हिंदी भाषा	बोली	बोली–क्षेत्र
1. पश्चिमी हिंदी (पश्चिमी उपभाषा) शौरसेनी अपभ्रंश	बुंदेली	झाँसी, जालौन, ललितपुर (चित्रकुट व बांदा के कुछ हिस्से)
	कन्नौजी	कन्नौज, इटावा, फरूर्खाबाद पिलीभित्त, शाहजहाँपुर, हरदोई
	खड़ीबोली	मेरठ, सहारनपुर, गौतम बूद्ध नगर, रामपूर, बिजनौर
	ब्रजभाषा	मथुरा, आगरा, एटा, बदायूँ, अलीगढ़, बरेली, मैनपुरी

हिंदी भाषा	बोली	बोली–क्षेत्र
2. पूर्वी हिन्दी (पूर्वी उपभाषा) अपभ्रंग	अवधी अर्द्धमगधी	लखनऊ, फेजाबाद, प्रतापगढ़, कानपुर नगर, कानपुर देहात इलाहाबाद, कौशाम्बी, सीताराम, गोण्डा रायेवली, फतेहपुर, बारांबकी, गोण्डा, सुल्तानपुर
	बघेली हिस्से	बादां चित्रकुट, सोनभद्र, मिर्जापुर, इलाहाबाद, मध्य प्रदेश से लगे सीमावर्ती

हिंदी भाषा	बोली	बोली–क्षेत्र
3. बिहारी हिन्दी	भोजपुरी	बस्ती, गोरखपुर, बलिया, सिद्धार्थ नगर, देवरिया, गाजीपुर, महाराजगंज, आजमगढ़, बनारस, मिर्जापुर, कुशीनगर, चंदौली, मऊ, जौनपुर, अम्बेडकर नगर आदि।

uksV & nks cksfy;ksa ls lVs gq, ftys fefJr cksyh dk ç;ksx djrs gSaA ftl çdkj xaxk unh ds fdlh Lfkku ds ty dks Li"kZ dj ;g ugha dj ldrs gSa fd ;g dkuiqj dh xaxk gS vkSj ;g bykgkckn dh xaxk gSA mlh çdkj ls lVs gq, ftys dh cksyh dk varj dj ikuk vlk/; gSA

cukjl] tkSuiqj] fetkZiqj] xkthiqj] cfy;k] xksj[kiqj] vktex<+] cLrh] "kkgkckn] pEikju] lkju vkfnA

exgh

laL—r ex/k ls fodflr “kCn exg ls lEcfU/kr gSA ;g viHkzax ls fodflr gSA bldk çeq[k dsUnz iVuk gSA bldks fy[kus ds fy, dSFkh o ukxjh fyfi dk ç;ksx gksrk gSA

exgh dk {ks= & iVuk] x;k] iykew] gtkjhckx] eqxaj] HkkxyiqjA

eSfFkyh

;g çkphu fefFkyk çns"k dh cksyh gSA bldk fodkl ekx/kh viHkza"k ds e/;orhZ :i ls gqvk gSA blesa lkfgR; jpuk vR;ar çkphudky ls pyh vk jgh gSA blesa fo|kifr] xksfoUnnkl] ukxktqZu vkfn çeq[k dfo gSaA bldk vU; uke frjgqfr;k Hkh gSA ;g rhu fyfi;ksa eSfFkyh fyih] dSFkh fyih rFkk ukxjh fyfi esa fy[kh tkrh gSA

- njHkaxk] eqt¶Qjiqj] iwf.kZ;k o eqaxsj vkfnA
- fgUnh dh ;s cksfy;k¡ vR;ar le`) gSaA [kM+h cksyh fgUnh ls gh orZeku lkfgfR;d fgUnh dk fodkl gqvk gSA [kM+h cksyh fgUnh gh gekjh jktHkk'kk gS rFkk ogh cgqla[;d yksxksa dh Hkk'kk gksus ds dkj.k jk'VHkk'kk cu xbZ gSA